International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 5, May 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

साहित्य और हिन्दी सिनेमा . कथाकार प्रेमचंद के संदर्भ में

डॉ. उषा बनसोडे
असोसिएट प्रोफेसर
कला वरिष्ठ महाविद्यालय
सांवगी औरंगाबाद

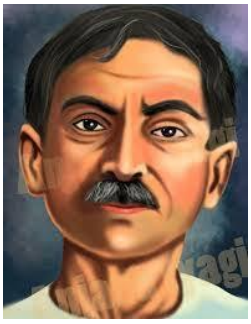

सिनेमा जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं लोकप्रिय माध्यम है। सिनेमा के व्दारा मनोरंजन के साथ साथ शिक्षा भी प्रदान की जाती है। सिनेमा समाज का दर्पण होता है। वह हमारे समय और समाज की झलक प्रस्तुत करता है।

मुंशी प्रेमचंद

भारतीय सिनेमा ने हाल ही में अपने सौ साल पूरे किये हैं। सिनेमा सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जो एक साथ करोडों लोगो को प्रभावित करता है, समाज का प्रबोधन करता है, समाज को सही दिशा प्रदान कर जागृत करता है। डॉ. प्रेमचंद पतंजलि के अनुसार ,`` फिल्म जनसंचार का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है, जो लोगों की मनोवृत्ती तथा विचारधारा को बदलने में मानवीय संवेदना जगाने में तथा सामान्य को सचेत करने में प्रभावशाली सिध्द हो सकता है। [1] सिनेमा हमें जीवन को देखने का एक नजरिया देता है। हिन्दी फिल्मों ने प्रारंभ से ही प्रबोधन और परिवर्तन, लोकजागरण तथा बौध्दिक क्रांती की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यह एक ऐसी विद्या है जिसका संदेश दुनियाभर में पहुँचता है।

साहित्य और सिनेमा का गहरा संबंध है। साहित्य और सिनेमा दोनो मनुष्य जीवन को ही बिंबित करते है। लेकिन दोनो विद्याएँ पृथक है। भारत जैसे देश में जहॉ आज भी जनसंख्या का बहुत बडा हिस्सा गरीबी औरं अशिक्षाके चलते अच्छे साहित्य से वंचित है,

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वहॉ सिनेमा का महत्त्व और अधिक बढ जाता है। सिनेमा मनुष्य को प्रत्यक्षतः प्रभावित करता है। ``फिल्मों में चलचिीित समाज के सभी वर्गां, परिÑश्यों और ईकाईयों में घटित घटनाएँ आम आदमी को स्वतः ही आकर्षित करती रही है। भले ही वह आम आदमी शिक्षित हो या अशिक्षित। इसके विपरीत साहित्य में वर्णित समाज सीमित दायरे में साहित्य पिपासुओं को ही सर्वप्रथम प्रभावित, प्रेरित कर पाता है तथा समाज पर उसका असर धीमी गति से होता है। किंतु जब इसे फिल्म रुप में प्रस्तुत किया जाता है तो इसकी प्रभावकारिता इतनी प्रबल और जगत की सीमाएँ भी सहज एवं शीघ्र नापी जाती है ।''[2]

साहित्य अभिव्यक्ती का सशक्त माध्यम है। लेखक अपने विचार और भावनाओं को साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहॅुचाना है। साहित्यकार जहॉ समाज के विभिन्न पक्षों से प्रभावित होकर साहित्य रचना करता हैं, वहॉ फिल्म निर्देशक उस साहित्यिक कृति को मूल रुप में रखते हुए, कल्पना का समावेश कर ऐसा नया रुप देता है जिससे वह कृति जीवंत और प्राण वान हो उठती है। प्रसिध्द निर्देशक सत्यजीत राय का मानना है कि ``केवल उपन्यास या कहानी पर आधारित ऐसी कोई फिल्म आज तक निर्मित नही हुई है जिसमें निर्देशक को अपनी कल्पना का सहारा न लेना पडा हो।''[3]

भारतीय हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक काल में ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों पर फिल्में बनी। 3 मई 1913 को दादासाहब फालके व्दारा निर्मित भारत की पहली फिल्म `राजा हरिश्चंद्र' आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक ^हरिश्चंद* से प्रेरित थी। भारतीय हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक काल में ऐतिहासिंक एवं पौराणिक विषयोंपर फिल्मे बनी। जैसे जैसे सिनेमा की लोकप्रियता बढती गई, मशहूर साहित्यिक रचनाओं को आधार बनाकर सिनेमा का निर्माण किया गया। हिन्दी सिनेमा को समृध्द करनेवाले रचनाकारों मे प्रेमचंद फणीश्वरनाथ रेणु, कमलेश्वर, मन्नु भंडारी, चंद्रघर शर्मा गुलेरी, राही मासूम रजा आदि उल्लेखनीय है। जनसामान्य के जीवन पर आधारित साहित्यिक कथाएँ सिनेमा में विशेष लोकप्रिय रही है।

हिन्दी के प्रसिध्द साहित्यकारों में प्रेमचंद पहले रचनाकार है जिन्होने सबसे पहले सिनेमा उद्योग मे प्रवेश किया । वे फिल्मो के माध्यम से अपना साहित्य आम जनता तक पहुँचाना चाहते थे। भारतीय किसान, उपेक्षित पिछडे तथा दलित और स्त्रियों की यथार्थ

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

स्थिती को दुनिया के सामने लाना चाहते थे, समाज का वास्तविक चित्र प्रस्तुत कर समाजसुधार करना चाहते थे। हिन्दी सिनेमा से जुडाव और फिल्मनगरी बंबई जाने के कारणों के संबंध में प्रेमचंद न मई 1934 मे लिखे गये एक पत्र मे स्पष्ट किया है कि `` जो वहॉ (फिल्म नगरी बंबई) में जाने पर खास फायदा होगा, वह यह कि उपन्यास और कहानियॉ लिखने में जो फायदा नही हो रहा है, उससे कही ज्यादा फिल्म दिखलाकर हो सकता है। कहानियॉ और उपन्यास जो लोग पढेंगे, फिल्म से हर जगह के लोग लाभ उठा सकते है।''[4]

हिन्दी की अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यकृतियोंपर फिल्मो का निर्माण हुआ है। हिंदी के श्रेष्ठ कहानीकार प्रेमचंद्र, फणीश्वरनाथ रेणु, तथा चंद्रधर शर्मा गुंलेरी की कृतियों से प्रेरित होकर सिनेमा के निर्माताओं ने फिल्मों का निर्माण किया है। प्रेमचंद की `शतरंज के खिलाडी' सद्‌गति कहानियोंपर लघु फिल्में बनी। साथ ही फणीश्वरनाथ रेणु की तीसरी कसम, पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी की `उसने कहा था', मन्नु भंडारी की `यही सच है', मैत्रेयी पुष्पा की फैसला, आदि कहानियों पर फिल्मो का निर्माण हुआ है।

फिल्म निर्माता मोहन भावनानी ने वर्ष 1934 में श्रमिक जीवन को केंद्र में रखकर प्रेमचंद की `मिलमजदूर'' कहानी पर मजदूर फिल्म बनायी थी। इस फिल्म के बंबई रिलिज होने पर वहॉ के एक बिझनेस मैन ने इसपर कोर्ट का स्थगन आदेश ले लिया था । इस फिल्म ने मजदूर संगठनों को अपने हित और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रति इतना जागरुक बना दिया की अंग्रजों ने इस पर सेंसर लगा दिया था। इस फिल्म का प्रदर्शन बहुत कम समयके लिए हो सका लेकिन इस फिल्म मे पहली बार उपेक्षित श्रमिक के रुप में आम आदमी को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी। आगे पंजाब में यह फिल्म `गरिब मजदूर' इस नाम से प्रदर्शित हुई।

प्रेमचंद के शतरंज के खिलाडी' पर निर्देशक सत्यजीत रे ने इसी नाम से फिल्म बनाई। सन 1977 ई. में इस फिल्म मे भारत के विलासी राजा एव प्रजा का चित्रण किया गया है। प्रेमचंद ने प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट किया है कि एक तरफ नवाब अपने अय्याशी में व्यस्त है और सामान्य जनता त्रस्त है। दूसरी तरफ लॉर्ड डलहौसी की खालसा नीति से भारतीय राजा शिकंजेमे फँसते जा रहे हैं। एक ओर अंग्रेज भारत की

आजादी को खत्म करके गुलाम बना रहे है तो दुसरी ओर मिरजा सज्जाद अली, और मीर रोशन अली ये नवाब शान शौकत से शतरंज खेलते हुए अपने में ही मशगूल रहते है।'' एक तरफ वाजिद अली शाह का पतन हो रहा है तो दूसरी तरफ दोनों लडते हुए गिर जाते है।

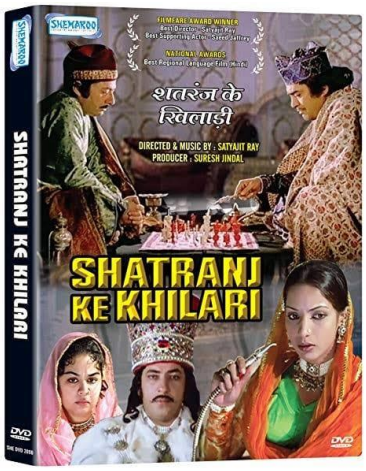

अभिनेता . संजीवकुमार, शबाना आझमी, सईद जाफरी, अमजद खान

मूल कहानी में नवाब वाजिद अली शाह का पात्र प्रत्यक्ष रुप में नही आता जब की सिनेमा में अमजद खान व्दारा प्रस्तुत चरित्र दिखाई देता है। मिरजा सज्जद अली का पात्र संजीवकपूर, उनकी पत्नी का पात्र शबाना आजमी, मीर रोशन अली का पात्र सैæयद जाफरी तथा उनकी पत्नी का पात्र फरीदा जलाल ने निभाया है। ऐतिहासिक धरातल पर आधारित इस फिल्म ने कई फिल्मी पुरस्कार प्राप्त किये हैं। सत्यजीत रायने संगीत, प्रकाश योजना, प्रसंगनिर्मीती, वातावरण निर्मिती, पात्रो के पहनावे तथा अभिनय व्दारा तत्कालीन परिवेस को सजीव बनाया है। ``कहानी और सिनेमा दोनों कालजयी कृतियॉ सिध्द हो गई है। कहानी से प्रेमचंद और सिनेमा से सत्यजीत राय अपनी अपनी पहचान सिध्द करने में सफल हुए है।[5]

प्रेमचंद की `सद्गति' कहानी सन 1931 में प्रकाशित हुई। इस कहानी में उन्होंने दुखी चमार और उसकी पत्नी झुरिया के माध्यम से भारतीय दलित समाज की शोषित और दयनीय स्थिती का चित्रण किया है। दुखी चमार की शादी योग्य एक लडकी है जिसकी सगाई करने के लिए वे पंडीत घासीराम को अपने घर बुलाना चाहते है लेकिन पंडीतजी

दुखी चमार के घर नही आ सकते। क्योंकी वह अछूत है। सीधा भी अपनी थाली में नही दे सकते । इसलिए महूए के पत्ते तोडकर एक पत्तल बनाते है। क्योंकी पंडीत घासीराम अछूतों के घर के बर्तनों में भोजन नही करते। पंडीत घासीराम को देने के लिए सीधे की व्यवस्था करते है। घासीराम को बैठनेमें असुविधा न हो इसलिए खटोली धोकर साफ करते है। इसतरह अपने घर की सारी तैयारिंयॉ कर दुखी पंडीत घासीराम के घर उसे बुलाने जाता है। जाते समय अपने साथ घास लेकर जाता है। बेटी की सगाई का सगून पुछने आये दुखी को पंडीतजी झाडू लगाते, बैठक को गोबर से लिपने खलिहान से भूसा ढोने एवं लकडी चोरने को कहता है। भूखेपट लकडीकी मोटीसी गॉठ चीरते चीरे थकजाता है।

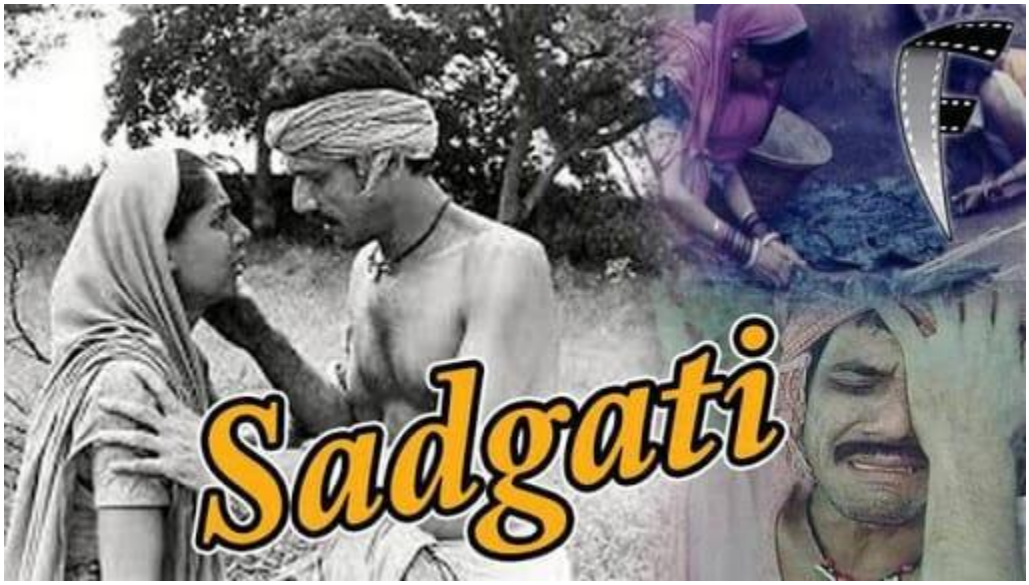

अभिनेता . ओमपुरी, स्मिता पाटील

भूख से व्याकूल दुखी तपती धूप में लकडी की गॉठ फोडने कोशिश करता है लेकिन चक्कर आने की वजह से गिर पडता है। दुखी की लाश को उठाने एक भी चमर नही आता तब आखिर पंडीतजी ही रस्सी का फंदा बनाकर मुर्दे के पैर में डालते है और लाश को घसीटकर गॉव के बाहर छोड आते है। दुखी की सेवा और निष्ठा का यही पुरस्कार उसे मिला था। कहानी में दलित वर्ग के प्रति आक्रोंश का चित्रण दिखाई देता है। ``प्रेमचंद की सद्‌गति कहानी को सत्यजीत रे की फिल्म सद्‌गति बनाने में फिल्मकार ने अपने अनुभवों, कल्पना, भाषा, परिवेश, संवाद आदि में आंशिक परिवर्तन किए हैं। प्रेमचंद ने दलितों में जागे शोषण के प्रति विद्रोह को जिस रुप में प्रस्तुत किया है, फिल्म मे वह कहानी की अपेक्षा कम नजर आता ह। फिर भी फिल्मकारने सवर्णो के क्रूर एवं अमानविय

रुप एवं दलितों की दयनीय एवं करुण दशा का सचित्र वर्णन करने में सफलता प्राप्त की है।

प्रेमचंद की उर्दू कहानी`औरत की फितरत' अथवा `त्रियाचरित्र' पर सन' 1941 में अब्दूल रशीद कारदार के निर्देशन में स्वामी' फिल्म बनी थी यह फिल्म हिंदू मिथक और परंपराओं पर आधारित है।

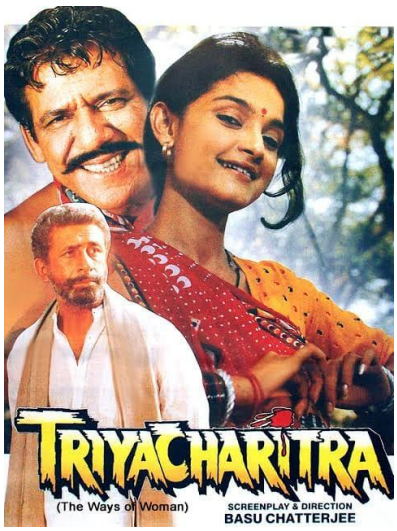

अभिनेता : ओमपुरी, नसरुद्दिन शहा

प्रेमचंद की कहानी `दो बैलों की कथा' पर निर्देशक कृष्ण चोपडा ने `हीरा और मोती' यह फिल्म बनाई है। इसमे प्रमुख कलाकार अभिनेता बलराज सहानी और अभिनेत्री निरुपमा राय थी। ये फिल्म दो ईमानदार बैल हीरा और मोती पर केंद्रींत है।

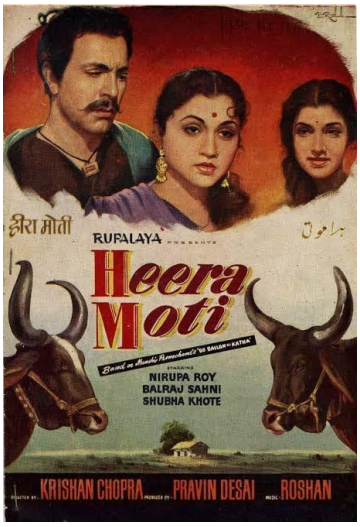

अभिनेता . बलराज सहानी, निरुपमा रॉय, शोभा खोटे

प्रेमचंद के कथासाहित्य ने भारतीय सिनेमा को जनसाधारण के जीवनपर आधारित समृध्द कथाएँ निर्देशित करने की प्रेरणा दी। प्रेमचंद फिल्मो के माध्यम से भारतीय किसान, उपेक्षित पिछडे तथा दलित और स्त्रियों की यथार्थ स्थिती को दुनिया के सामने लाना चाहते थे समाजसुधार करना चाहते थे। इसमे दो राय नही होनी चाहिए कि सिनेमा का प्रगतिशील काल प्रेमचंद के आगमनसे ही चमत्कृत हुआ। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि सिनेमा का स्वर्णयुग प्रेमचंद की कहानियों के हस्तक्षेप से ही आरंभ होता है। जबकि उन्होंने बडे ठोस इरादे से मुंबई दादर के फिल्म निर्माण उद्योग में वर्ष 1934 में वार्षिक अनुबंध पर प्रवेश किया था और मोहन भवनानी की फिल्म प्रोडक्शन कंपनी अजंता सिनेटोन से वे पटकथा लेखक के रुप में जुडे थे'[7]

प्रेमचंद के कथासाहित्य को फिल्माने की कोशिश बार बार की जाती रही है। निर्माता नानूभाई वकील ने वर्ष 1934 मे प्रेमचंद के उपन्यास `सेवासदन' के कथानक पर आधारित फिल्म बनाई और तत्पश्चात इसी उपन्यास पर वर्ष 1938 मे तमिल फिल्म निर्माता के सुब्रमण्यम ने फिल्म बनाई जो बॉक्स ऑफिस पर बेहद सफल रही। सेवासदन उपन्यास में प्रेमचंद ने सुमन के माध्यम से नारी के अधःपतन एव उत्थान को सशक्त स्वर दिये है।``

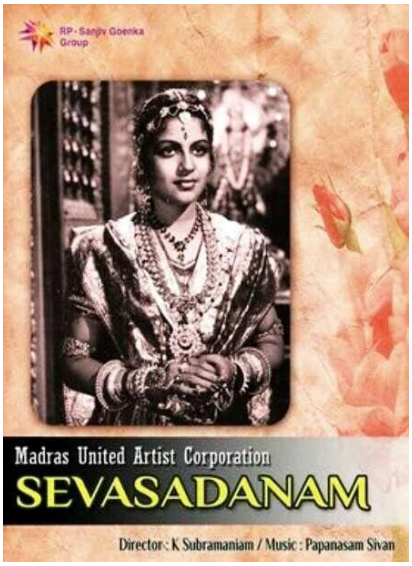

अभिनेत्री : सुब्बालक्ष्मी

प्रेमचंद के स्वर्गवास के पश्चात जब उनके उपन्यास `गोदान, गबन और रंगभूमि' पर फिल्मे बनी तब ऐसा माना जाने लगा कि हिन्दुस्तानी फिल्मों का उद्देश ही उस गुलामी के दोर में आजाही की आवाज बुलंद करने के साथ साथ देश की जटील भेदभावपूर्ण और पक्षपातपूर्ण

व्यवस्थाओं में पिस रहे आम आदमी को आर्थिक, धार्मिक, जातीय और सभी प्रकार की निजात दिलाना है और इन उद्देशो के लिए प्रेमचंदीय साहित्य सर्वोपयुक्त है।''[8] प्रेमचंद के साहित्य पर आधारित फिल्मे लोगोकी विचारधारा बदलने मे, मानवीय संवेदना जगाने में तथा आम आदमी को सचेत करने में प्रभावशाली सिध्द हुई है। मनोरंजन के साथ साथ लोगों को शिक्षा प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण भूमिका इन फिल्मों ने निभाई है। 1980 मे उनके उपन्यास पर बना टि.वी. धारावाईक निर्मला बहुत लोकप्रिय हुआ था ।

साहित्य और सिनेमा दोनो स्वतंत्र विधाएँ है फिर भी एक . दुसरे को प्रभावित एवं प्रेरित करते है। ` साहित्य के पास सिनेमा की जरुरतों को पूरा करने के लिए अथाह भंडार है। भव.दशा, पात्रो, Ñश्यों, वास्तुकला, परिवेश और भावनात्मक स्थितीयों के Ñश्यात्मक दौर है। साथ ही भाव.भगिमा, ध्वनियों, शब्दो और संगीत के सूक्ष्म प्रभावों तक के विवरण साहित्य के पास मौजूद है। सुखद बात यह है कि साहित्य ने सिनेमा की मदद के लिए कभी कोताही नही की। सिनेमा को जब जब जरुरत हुई साहित्यने खुले मन से उसका सहयोग किया'।''[9] यही कारण है की आगे पं. सुदर्शन सआदक मंटो, कैफ आजमी, जावेद अखतर गुलजार आदी जैसे प्रसिध्द व्यक्तित्व सिनेमा में अभिव्यक्ति के नये आयाम खोजने गए। कहा जा सकता है की प्रेमचंद के साहित्य में चित्रित `आमआदमी'' के साथ चलते चलते भारतीय सिनेमा ने सभी सामाजिक और धार्मिक वर्जनाओं और राष्ट्रीय-आंतरराष्ट्रीय सीमाओं को तोडा है लेकिन साहित्य का दामन कभी नही छोडा है। आनेवाले दिनों में साहित्य और सिनेमा दोनों मिलकर समाज में आम आदमी के जीवन को सर्वांगीण तौरपर बेहतर बनाने की अपनी अपनी भूमिका ओंको बखूभी निभाएँगे। अच्छी साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाकर सिनेमा ने अपनी सामाजिक प्रतिबध्दता निभाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सत्यजीत रे ने प्रेमचंद के कथासाहित्य को आधार बनाकर फिल्मों का निर्माण कर भारतीय सिनेमा को एक नई दिशा प्रदान की है।

संदर्भः

1) डॉ. प्रेमचंद पतंजलि - संचारक्रांति और विश्व जनमाध्यम पृ. 55

2) मनोज श्रीवास्तव मोक्षेंद्र- आजकल जनवरी 2015 पृ. 47

3) सत्यजीत राय - चलचित्र कल और आज - सिनेमा की संवेदना - पृ. 125

4) पुखराज जॉगिंड संवेद दिसंबर 2012,पृ . 65

5) डॉ. रघुनाथ देसाई- साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा पृ. 119

6) साहित्य और सिनेमा सं डॉ शैलजा भारव्दाज पृ. 194

7) मनोज श्रीवास्तव मोक्षेंद्र आजकल जनवरी 2015 पृ. 49

8) वही पृ. 49

9) हेमलता काटे - साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा, पृ. 60

10) मनोज श्रीवास्तव आजकल जनवरी 2015 - पृ. 50